राज कॉमिक्स

मूल्य 8.00 संख्या 640

इंस्पेक्टर स्टील

जेल से भागा एक
लिट्टे आतंकवादी गिरफ्तार

हत्याकांड

सरस्वती
आत्महत्या की

हजारों कार्यकर्ता गिरफ्तार

कश्मीर में 12 लोगों की मौत
14 आतंकवादी गिरफ्तार

कपर्दी लागू

पुलिस की गोली मारक

37 करोड़ की बेनामी
संपत्ति बरामद हुई

www.comics.animehood.net

संजय गुप्ता की पेशकश।

इंस्पेक्टर

लेखक: हनीफ अजहर | चित्रांकन: सुरेश कुमार | सहयोग: सुरेश डीमाल | सम्पादक: मनीष गुप्ता | कैलीग्राफी: तुलाराम आजाद

राजनगर पुलिस हैडक्वार्टर –

व्हाट?... व्हाट यू से?

वही जो तुम्हारे कानों ने सुना कमिश्नर...

मुख्यमंत्री को लेकर जिस विशेष विमान ने अभी – अभी राजनगर एयरपोर्ट से हवा में उड़ने के लिए अपने पंख फैलाये हैं उसमें एक बेहद शक्तिशाली बम रखा हुआ है। अब अगर मैं अपने हाथ में थमे रिमोट के स्विचों से जरा भी छेड़खानी...

...कर दूं तो जानते हो क्या होगा

...विमान और उसमें सवार हर शख्स के चिथड़ों की बारिश होगी इस शहर पर!

नहीं-नहीं, तुम झूठ बोल रहे हो। क्या सुबूत है तुम्हारी बातों का?

गुड, अब आगे सही 'लाइन' पर... मुझे पचास करोड़ रुपया चाहिए। एयरपोर्ट अथोरिटी को मैसेज भेज दो जब तक मेरी मांग नहीं मानी जाती तब-तक प्लेन राजनगर एयरपोर्ट से दूर न जायेबल्कि एयरपोर्ट के ऊपर ही चक्कर काटता रहे...
...अगर प्रशासन को मेरी बात मंजूर है तो अब से ठीक एक घन्टे बाद किसी व्यक्ति को सफेद झण्डे के साथ एयरपोर्ट के रनवे पर खड़ा देना, मुझे पता चल जायेगा!
सुपुत! ...सुपुत मैं तुम्हें एक सेकेण्ड में दे सकता हूं कमिश्नर लेकिन सोच लो सुपुत के साथ तुम्हें इस देश के मुख्यमंत्री और उनके सहयोगियों की चिथड़ों में बंटी लाश का तोहफा भी मिलेगा।
क...क्या चाहते हो?
...और सुनो, विमान हर समय मेरी नजर में है। उसे नीचे उतारने की या उसके सवारों को पैराशूट से कूदवाने की कोशिश की तो उसका अंजाम विनाश के सिवा कुछ नहीं होगा! इसी के साथ तुम्हें एयरपोर्ट अथोरिटी को आदेश देना है कि वे प्लेन से रेडियो सम्बंध नष्ट कर दें!
खटक
पसीने से तर-बतर हो गया कमिश्नर का सारा शरीर मानो उन पर घड़ों पानी डाल दिया गया हो -
ओफ्फ! हमें तुरन्त ही इस सनसनी-खेज घटना की खबर ऊपर देनी होगी! ओह!
अब किसका फोन?
कमिश्नर के रिसीवर रखते ही फोन बज उठा था -
एक झटके से रिसीवर उठाकर कमिश्नर ने उसे अपने कान से लगाया -
मैं डाक्टर अनीस बोल रहा हूं कमिश्नर साहब खुशियां मनाइये मेरा वर्षों का जी-तोड़ प्रयास और अथक सपना 'रेज' से आया.. अब उसके असर-नाम देखने के लिए मेरी लैब में तुरंत पहुंचिये
हैलो?

उधर राजनगर एयरपोर्ट के ऊपर घूमता यह विशेष विमान जो फ्रांस जाने के लिए उड़ा था...
...जिसके सवारों के चेहरों पर मौत का तांडव होता साफ नजर आ रहा था–
प्लेन में बम रखा है, पर कहां ?
मौत हमारे सिर पर मंडरा रही है हम नहीं बचेंगे !
अनीस... सुनो अनीस, मैं तुम्हारी सफलता पर बेहद खुश हूं लेकिन फिलहाल मैं तुम्हारी उस सफलता को देखने तुम्हारे पास नहीं आ सकता क्योंकि मैं इस समय बहुत परेशान हूं !
इसी के साथ कहीं सक्रिय हो उठा कोई –
उधर योजना ने कंपा डाला कमिश्नर गुप्ता का सारा बदन –

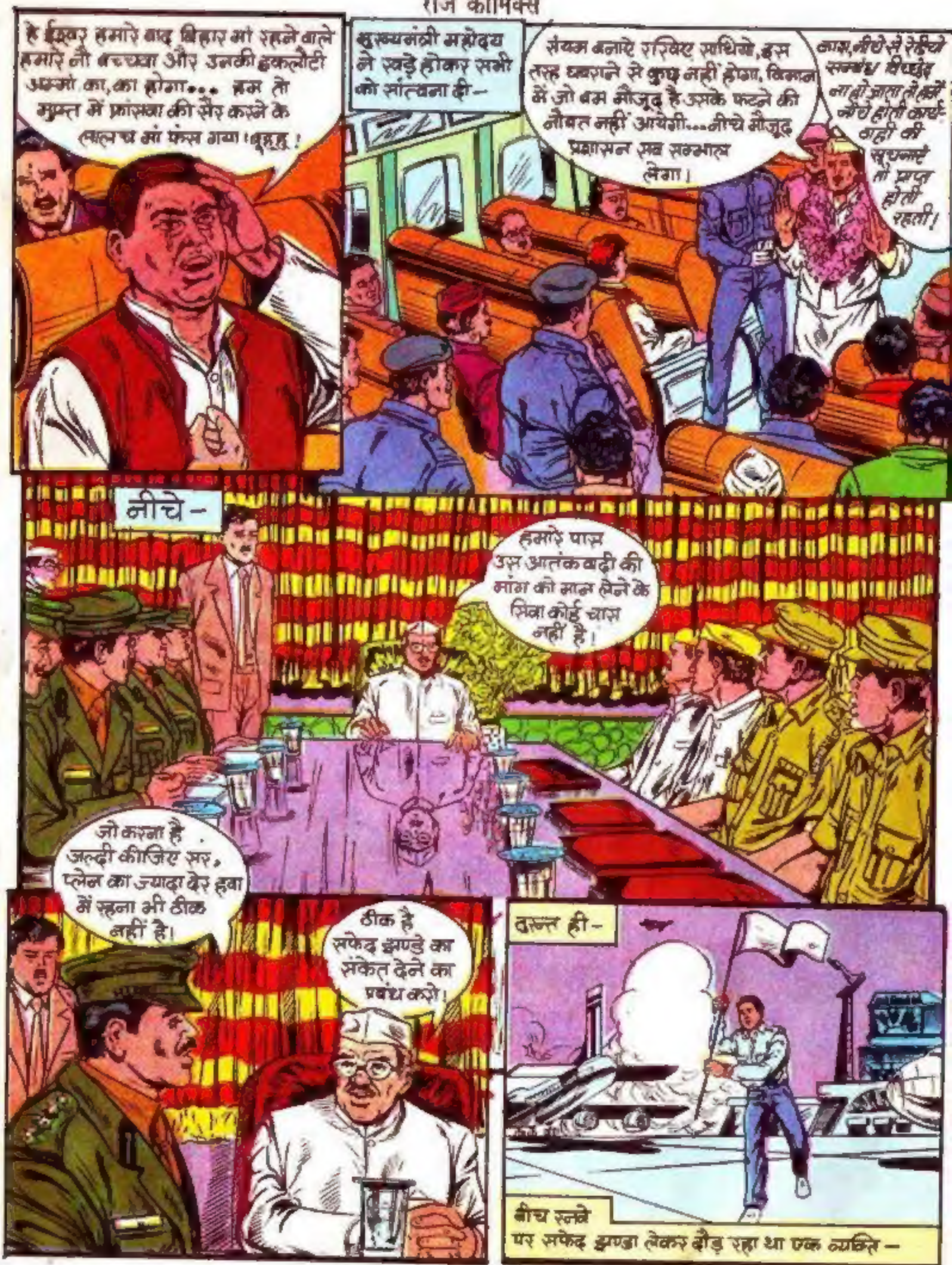
हे ईश्वर हमारे बाद बिहार में रहने वाले हमारे नौ बच्चों और उनकी हकलौटी उम्मीदों का, का होगा... हम तो मुफ्त में फ्रांसवा की सैर करने के चक्कर में फंस गया। बूहहू !
मुख्यमंत्री महोदय ने खड़े होकर सभी को सांत्वना दी—
संयम बनाये रखिए साथियो, इस तरह घबराने से कुछ नहीं होगा, विमान में जो बम मौजूद है उसके फटने की नौबत नहीं आयेगी...नीचे मौजूद प्रशासन सब सम्भाल लेगा।
अगर नीचे से रेडियो सम्पर्क बीच में ना हो जाता तो हमें नीचे होती कार्यवाही की सूचनाएँ तो प्राप्त होती रहती।
नीचे—
हमारे पास उस आतंकवादी की मांग को मान लेने के सिवा कोई चारा नहीं है।
जो करना है जल्दी कीजिए सर, प्लेन का ज्यादा देर हवा में रहना भी ठीक नहीं है।
ठीक है सफेद झण्डे का संकेत देने का प्रबंध करो।
तुरन्त ही—
बीच रनवे पर सफेद झण्डा लेकर दौड़ रहा था एक व्यक्ति—

जिस पर टिकी हुई थी फ़लक पर समूह में मौजूद इस 'फ़लकार' की गिद्ध सी निग्राहें —

सफ़ेद झण्डा! मतलब हमारी मांग मान ली गई...

...उस कुछ ही पलों में पचास करोड़ रुपये...

...मेरे हाथ में होंगे!

और तुम होगे....

...राजनगर सेण्ट्रल जेल में!

क...कौन हो तुम... और एक प्रतिष्ठित फ़लकार से ये कैसी बातें कर रहे हो?

तुम कितने बड़े फ़लकार हो ये तुम्हारी कार्य शैली ही बता रही है जो अन्य फ़लकारों से एकदम भिन्न है! सभी फ़लकार 'कवरेज' करने में व्यस्त हैं और तुम उस सफ़ेद झण्डे वाले को देखने में! और तुम फ़लकार नहीं आतंकवादी हो ये बात अभी...

झाड़

...साबित हो जायेगी!

दूसरे ही पल अपने असली रूप में आ गया वह पत्रकार –
ठीक पहचाना तूने मैं वही हूं जिसने मुख्यमंत्री जी के विमान में बम रखा है और उस बम के रिमोट का सम्बंध भी मुझसे है...
...लेकिन तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा !
...क्योंकि मैं तेरे शरीर को छलनी बना दूंगा !
तड़तड़तड़
उस आतंकवादी की गन से निकली गोलियों की बौछार...
...उसके आगे बढ़ते कदमों को न रोक पाई–
तड़तड़तड़
!!
ये बच्चों वाले खेल खेलना छोड़...
भड़ाक
...और रिमोट मुझे सौंप दे !
!!
जल्दी कर बता कहां है रिमोट?

बता !
नहीं, मैं तुम्हें रिमोट के बारे में नहीं बताऊंगा हरगिज नहीं बताऊंगा!
तुमने हम से धोखा किया है अब तो प्लेन में बैठा हर आदमी मरे ही मरे!
झड़ाक
उसने अपना कैमरा तेजी से नीचे पटक दिया
कैमरे के जमीन से टकराने के साथ ही -
ओह! ये क्या जिस सिग्नल फ्लेयर को हवा में जाना था वह मेरी गलती से जमीन पर ही रह गई। ओह, अब मेरे साथियों को रिमोट का स्विच दबाने का सिग्नल नहीं मिल सकता !
...लेकिन चिंता नहीं समय पूरा होने के बाद वे मेरा सिर्फ दस मिनट और इंतजार करेंगे इतने समय में वे समझ जायेंगे कि मैं कत्ल गया हूं
...दस मिनट सिर्फ दस मिनट हैं तेरे पास। अब तू चाहे तो इन दस मिनटों को तू मुझे मारने-पीटने में गुजार दे...
...या ऊपर उड़ते प्लेन में मौजूद गणमान्य लोगों को बचा ले !

कहर बनकर टूटा आतंकवादी पर उसका गुस्सा –
भड़ाक
उसने एक तरफ खड़े हेलीकॉप्टर की तरफ दौड़ लगा दी –
मेरे पास समय बहुत कम है ! इन दस मिनटों में मुझे अपने कर्तव्य को निभाने के लिए अपनी...
... जान की बाजी लगा देनी है !
अपने भरपूर वार से आतंकवादी को मौत की काली दुनिया में पहुंचाकर...
...और अब तो उसके दस मिनट के पंद्रह सैकिण्ड गुजर भी चुके हैं !
इधर उस आतंकवादी का साथी –
एयरपोर्ट पर मौजूद हमारा साथी फेल हो या नहीं ले किन जो समय फिक्स किया गया था वह गुजर चुका है !...
तुरन्त ही –
उड़ान भरो ! क्लिक !
हड्डियों में सिरहन दौड़ा देने वाली उस आवाज के मालिक को पायलट भला कैसे इन्कार करता –
...मुझे ठीक दस मिनट बाद इस रिमोट का स्विच दबाना है...
फलस्वरूप –
तीन मिनट गुजर चुके हैं ! और बाकी है
गड़
गड़
गड़

गड़ गड़
...सिर्फ सात मिनट।
अगले एक मिनट में हैलीकॉप्टर प्लेन के ऊपर था –
अगले दो मिनटों में वह प्लेन पर...
और अगले कुछ सैकिण्डों में वह रबेल रहा था अपनी जान पर –
उफ! अजीब दीवाना है, साक्षात मौत से खेल रहा है। अगर ज़रा भी चूक गया तो...
...और उससे अगले कुछ सैकेण्डों में वह विमान के अंदर था –
भड़ाक
अ...आप कौन हैं, अन्दर कैसे आए?

— तो अगले बहु मूल्य पांच सैकेण्डों में वह पायलटों को निर्देश देने वाला महत्त्वपूर्ण कार्य ना कर रहा होता —
खतरा टल चुका है विमान को नीचे ले चलो सिनक !
पायलटों के पास सोचने — समझने का समय नहीं था —
नीचे हटो !
जवाब देने के लिए अगर वह रुकता ...
विमान तेजी से नीचे की ओर बढ़ने लगा —
इधर वह —
नौ मिनट और दस सैकेण्ड गुजर चुके हैं ! अब मेरे पास सिर्फ पचास सैकेण्ड बाकी हैं ...
...और इन पचास सैकेण्ड में मुझे प्लेन में इसे बम को ढूंढना है !

इस प्रकार
से गुजर गये उसके चालीस सैकेण्ड-
लेकिन उसे सफलता नहीं मिली—
अपनी स्केलिंग आई से मैंने प्लेन का चप्पा-चप्पा छान मारा है लेकिन बम कहीं नहीं मिला, कहीं ऐसा तो नहीं कि बम होने की बात ही झूठी हो।
नहीं ये नहीं हो सकता, इतना बड़ा आतंकवादी ग्रुप सिर्फ धमकियों के बल पर अपना 'काम' करवाने की नहीं सोच सकता...
ओह माई गॉड! ...उस तरफ तो मेरा ध्यान ही नहीं गया!
...बम प्लेन में ही कहीं है... लेकिन कहां?
बम तो मुख्यमंत्री जी के पास है!
वह तेजी से मुख्यमंत्री की तरफ दौड़ा—

...लेकिन उनके सुरक्षाकर्मी उनके लिए दीवार बन गये-
रुको!
रास्ता छोड़ो बेवकूफ! मुझे मुख्यमंत्री जी तक पहुंचने दो वरना सभी मारे जायेंगे!
नहीं, हम तुम्हें उन तक नहीं पहुंचने देंगे
ओह 'जैड' प्रणाली के सुरक्षाकर्मी होने के नाते इन्हें किसी भी हाल में... किसी को भी मुख्यमंत्री तक पहुंचने ना देने के आदेश हैं, लेकिन मुझे उन तक पहुंचना है!
भड़ाक
भड़ाक
...और चूंकि मेरे पास मात्र पांच सेकेण्ड बचे है इसलिए इन्हें बातों से नहीं इस तरह समझाया जा सकता है!
रुको!
'जैड' प्रणाली के सुरक्षाकर्मियों को धता बताकर -
वह मुख्यमंत्री तक पहुंचा -
पीछे हटो बेवकूफो!
उफ! सुरक्षा-कर्मियों की बेवकूफी की वजह से तीन सेकेण्ड खराब हो गये हैं! अब तो मेरे पास एक ही उपाय है कि

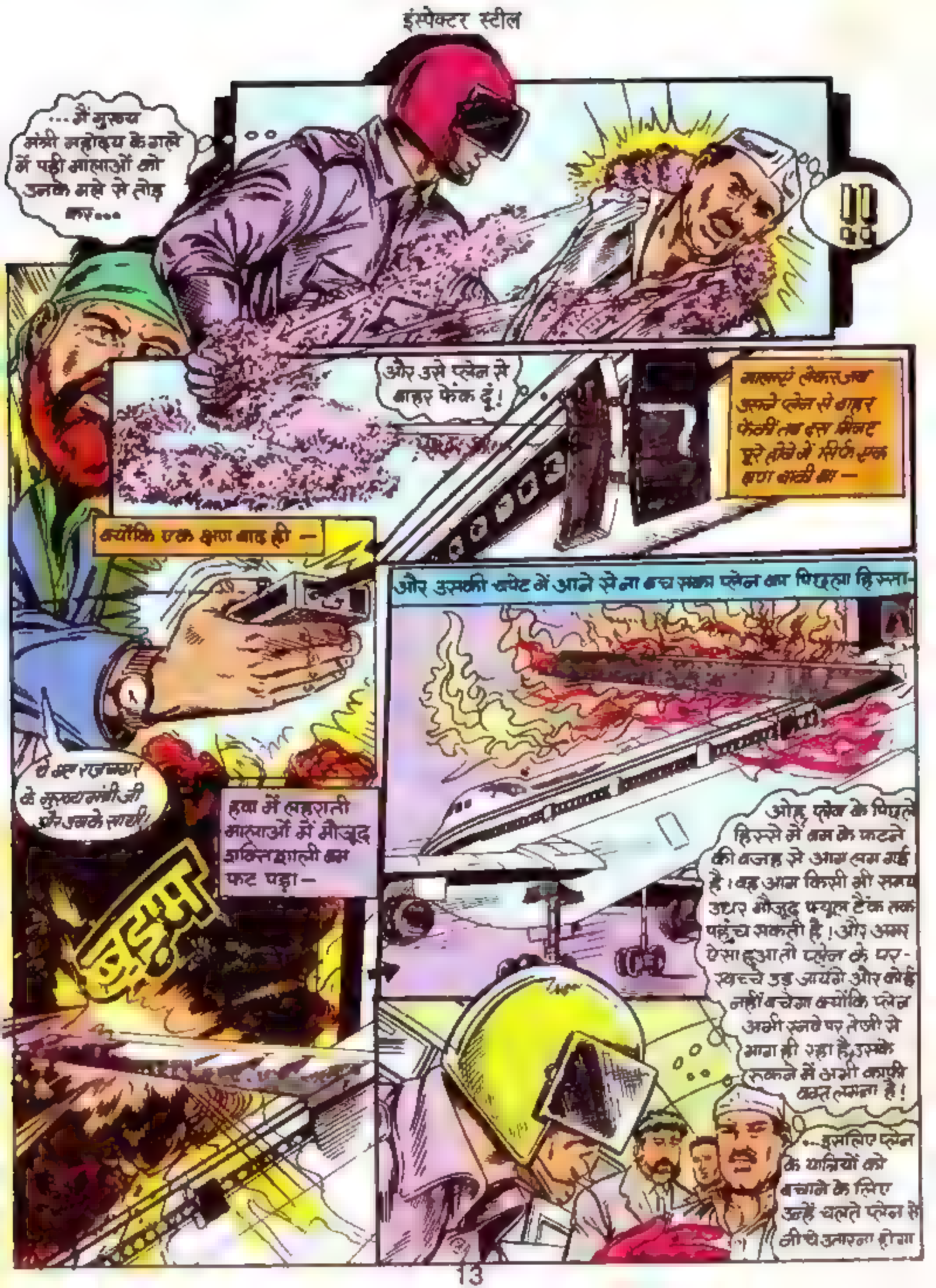
...मैं मुख्य मंत्री महोदय के गले में पड़ी मालाओं को उनके गले से तोड़ कर...
!!
और उसे प्लेन से बाहर फेंक दूं!
मालपुरा लेकर जब उसने प्लेन से बाहर फेंकी तब इस मिनट पूरे प्लेन में सीरीज एक हवा चली थी —
क्योंकि एक क्षण बाद ही —
और उसकी चपेट में आने से ना बच सका प्लेन का पिछला हिस्सा-
ओह! प्लेन के पिछले हिस्से में बम के फटने की वजह से आग लग गई है। वह आग किसी भी समय ऊपर मौजूद फ्यूल टैंक तक पहुंच सकती है! और अगर ऐसा हुआ तो प्लेन के पर-खच्चे उड़ जायेंगे और कोई नहीं बचेगा क्योंकि प्लेन अभी रनवे पर तेजी से भाग ही रहा है, उसके रुकने में अभी काफी वक्त लगना है!
...इसलिए प्लेन के यात्रियों को बचाने के लिए उन्हें चलते प्लेन से नीचे उतारना होगा
ये अब राजधानी के मुख्यमंत्री जी और उनके साथी!
हवा में लहराती मालाओं में मौजूद शक्तिशाली बम फट पड़ा —
धड़ाम

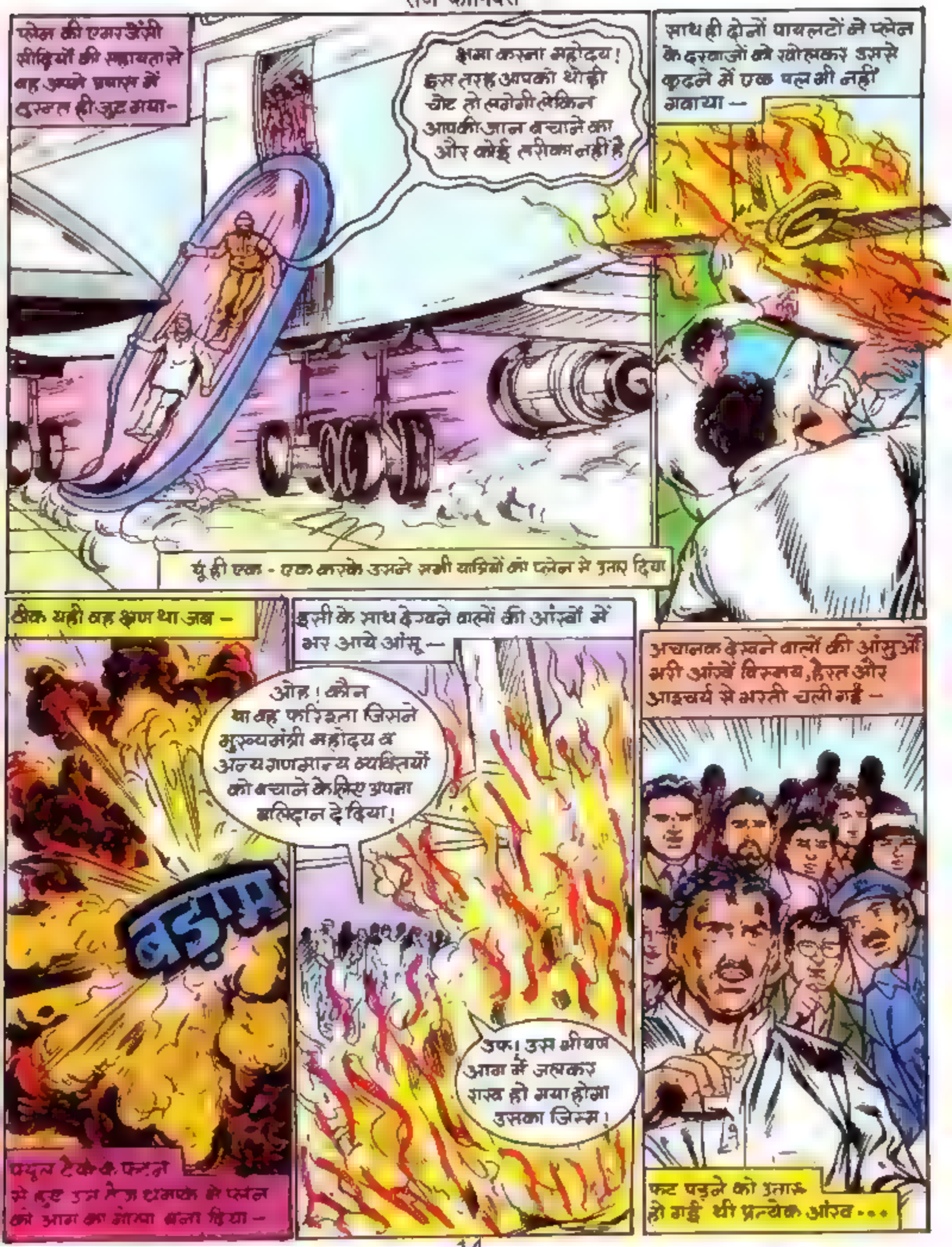
प्लेन की एमरजेंसी सीढ़ियों की सहायता से वह अपने प्रयास में सफलता ही जुट गया-
क्षमा करना महोदय! इस तरह आपको थोड़ी चोट तो लगेगी लेकिन आपकी जान बचाने का और कोई तरीका नहीं है
साथ ही दोनों पायलटों ने प्लेन के दरवाजों को खोलकर उससे कूदने में एक पल भी नहीं गवाया —
यूं ही एक - एक करके उसने सभी यात्रियों को प्लेन से उतार दिया
ठीक यही वह क्षण था जब —
बड़ाम
प्रचण्ड टेक के फटने से हुए उस भीषण धमाके ने प्लेन को आग का गोला बना दिया —
इसी के साथ देखने वालों की आंखों में भर आये आंसू —
ओह! कौन था वह फरिश्ता जिसने मुख्यमंत्री महोदय व अन्य गणमान्य व्यक्तियों को बचाने के लिए अपना बलिदान दे दिया!
उफ! उस भीषण आग में जलकर राख हो गया होगा उसका जिस्म!
अचानक देखने वालों की आंसुओं भरी आंखें विस्मय, हैरत और आश्चर्य से भरती चली गईं —
फट पड़ने को उतारू हो गईं थीं प्रत्येक आंख...

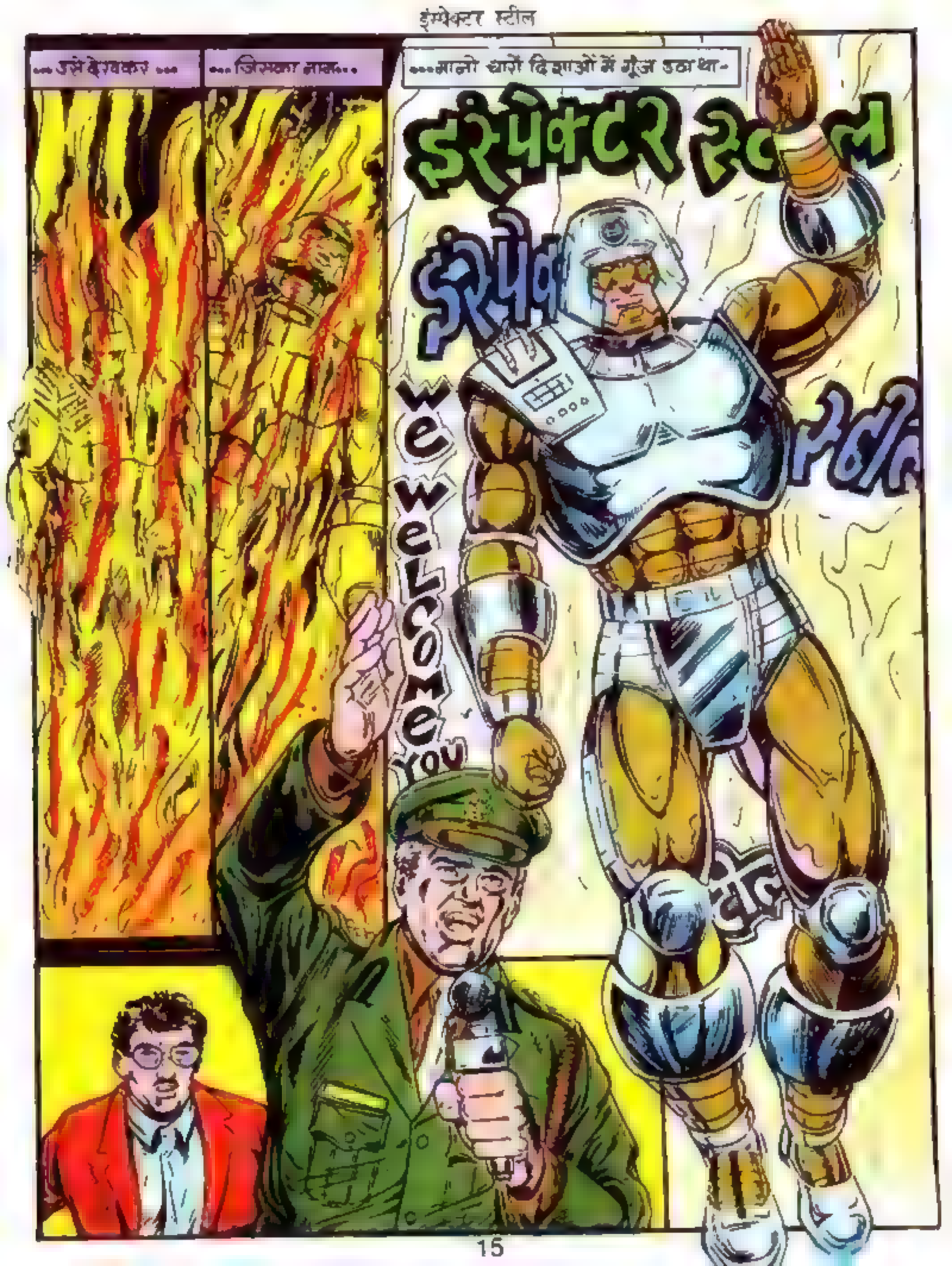
...उसे देखकर ...
...जिसका नाम...
...मानो चारों दिशाओं में गूँज उठा था-
इंस्पेक्टर स्टील
welcome
welcome
you

कमिश्नर के पास पहुंचकर एकदम मशीनी अंदाज में सैल्यूट मारा इंस्पेक्टर स्टील ने –

इंस्पेक्टर स्टील ऑन ड्यूटी सर !

तभी पत्रकारों की भीड़ से कमिश्नर और इंस्पेक्टर स्टील को आ घेरा –

सर, क्या आप बतायेंगे क्या है ये इंस्पेक्टर स्टील ?

इंसान और रोबो का मिलाजुला रूप बढ़ते हुए अपराधों को रोकने के लिए जिसे हमने विशेष रूप से तैयार किया है अपने फर्ज की रक्षा के लिए इंस्पेक्टर स्टील चौबीस घंटे इस शहर की जनता के लिए उपलब्ध होगा !

मेरी इस सवाल का मेरे पास कोई जवाब नहीं है।

एक आखिरी सवाल, इंस्पेक्टर स्टील नामक यह अनोखा सिपाही है कौन ?...और आपने इसे रोबो का रूप कैसे दे दिया ?

जवाब नहीं है या जवाब देना नहीं चाहते ?

अ...आप कुछ भी समझ सकते हैं ! प्लीज रास्ता छोड़िये।

कम ऑन इंस्पेक्टर स्टील !

पत्रकारों की भीड़ को 'काई' की तरह चीरते कमिश्नर ...

...इंस्पेक्टर स्टील के साथ अपनी गाड़ी में जा बैठे –

चलो ड्राइवर !

ड्राइवर ने जिप्सी आगे बढ़ा दी –

सड़क पर पुलिस हैड - क्वार्टर की तरफ दौड़ती जिप्सी में --

गुड। वेरी गुड! पहले की तरह तुम आज भी अपनी खुली आंखें और खुले दिमाग का भरपूर इस्तेमाल कर लेते हो

सहसा करण्ट लगने सा चौंका इंस्पेक्टर स्टील --

'पहले की तरह' का क्या मतलब सर ?

क....कुछ नहीं...कुछ भी तो नहीं !

लड़खड़ा कर रह गई थी कमिश्नर ऑफ पुलिस की जुबान -

और इसी बात ने इंस्पेक्टर स्टील को दूसरा सवाल करने का अवसर दे दिया --

सॉरी सर ! मुझे लगता है आप मुझसे कुछ छिपाने का प्रयास कर रहे हैं?... क्या मैं जान सकता हूं मैं कौन हूं?...मेरे इंसान से मशीन बनने के पीछे क्या कहानी है?...

पत्थर की मानिन्द कठोर हो गया कमिश्नर का चेहरा --

तुम्हें कुछ जानने की जरूरत नहीं है... कुछ याद नहीं रखना तुम्हें इस बात के सिवा कि तुम एक सिपाही हो जिसका फर्ज है जुर्म और पाप के अंधेरे में कानून की रोशनी को जलाए रखना और उसकी हिफाजत करना इस बात के सिवा तुम्हें कुछ भी...

...बताइये सर!

...मैं अपने बारे में जानना चाहता हूं?

...कुछ भी याद नहीं रखना इंस्पेक्टर स्टील! ओ.के.

यस सर!

गुड! गो अहेड द पाइंट!

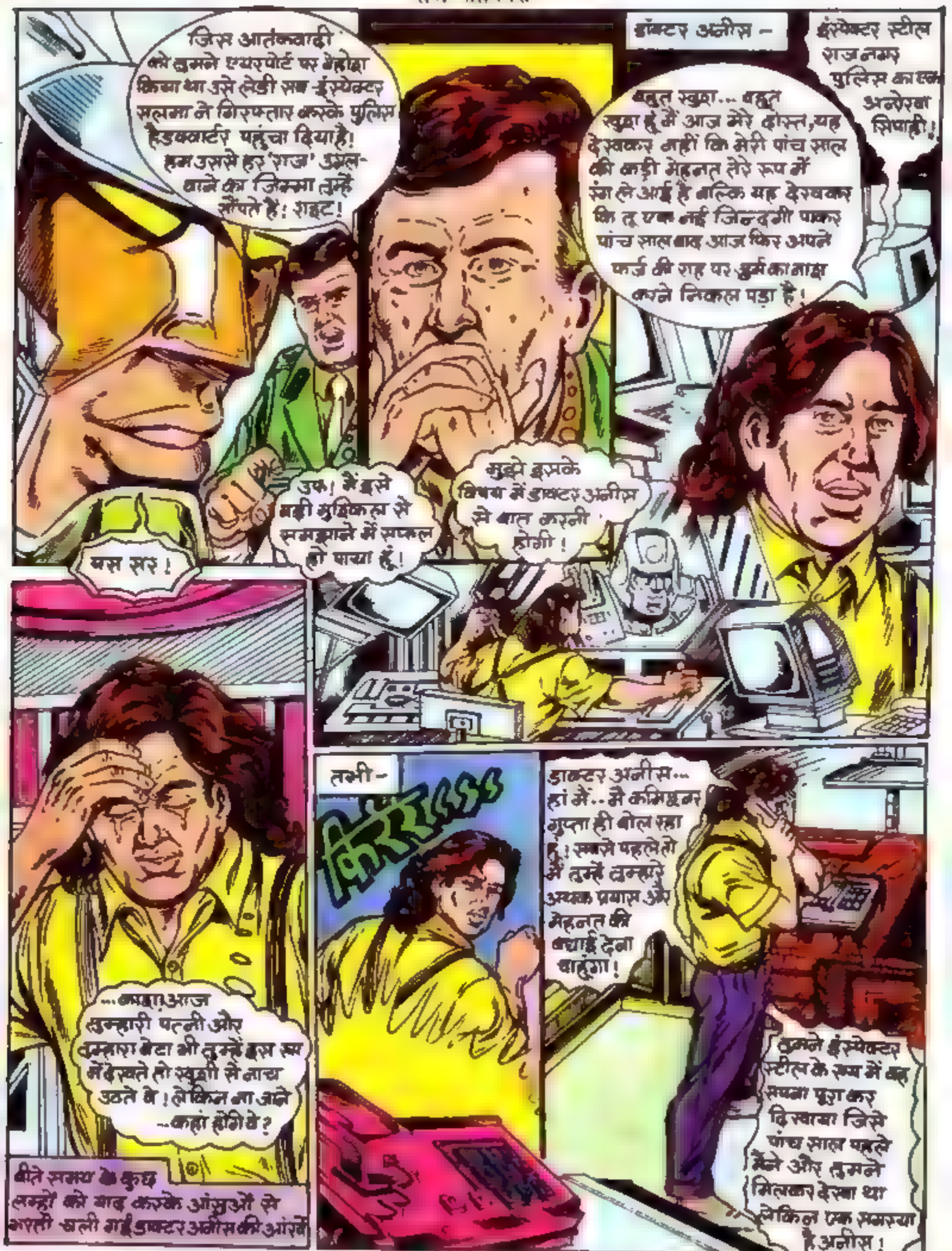
जिस आतंकवादी को तुमने एयरपोर्ट पर बेहोश किया था उसे लेडी सब-इंस्पेक्टर सलमा ने गिरफ्तार करके पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचा दिया है! हम उससे हर 'राज' उगलवाने का जिम्मा तुम्हें सौंपते हैं! शाबाश!
डॉक्टर अनीस –
इंस्पेक्टर स्टील राज नगर पुलिस का एक अनोखा सिपाही!
बहुत खुश... बहुत खुश हूं मैं आज मेरे दोस्त, यह देखकर नहीं कि मेरी पांच साल की कड़ी मेहनत तेरे रूप में रंग ले आई है बल्कि यह देखकर कि तू एक नई जिन्दगी पाकर पांच साल बाद आज फिर अपने फर्ज की राह पर जुर्म का नाश करने निकल पड़ा है!
उफ! मैं इसे बड़ी मुश्किल से समझाने में सफल हो पाया हूं!
मुझे इसके विषय में डाक्टर अनीस से बात करनी होगी!
यस सर!
...अहा! आज तुम्हारी पत्नी और तुम्हारा बेटा भी तुम्हें इस रूप में देखते तो खुशी से नाच उठते वे! लेकिन ना जाने ...कहां होंगे वे?
बीते समय के कुछ लम्हों को याद करके आंसुओं से भरती चली गई डाक्टर अनीस की आंखें
तभी –
फिर...
डाक्टर अनीस... हां मैं... मैं कमिश्नर गुप्ता ही बोल रहा हूं! सबसे पहले तो मैं तुम्हें तुम्हारे अथक प्रयास और मेहनत की बधाई देना चाहूंगा!
तुमने इंस्पेक्टर स्टील के रूप में वह सपना पूरा कर दिखाया जिसे पांच साल पहले हमने और तुमने मिलकर देखा था लेकिन एक समस्या है अनीस!

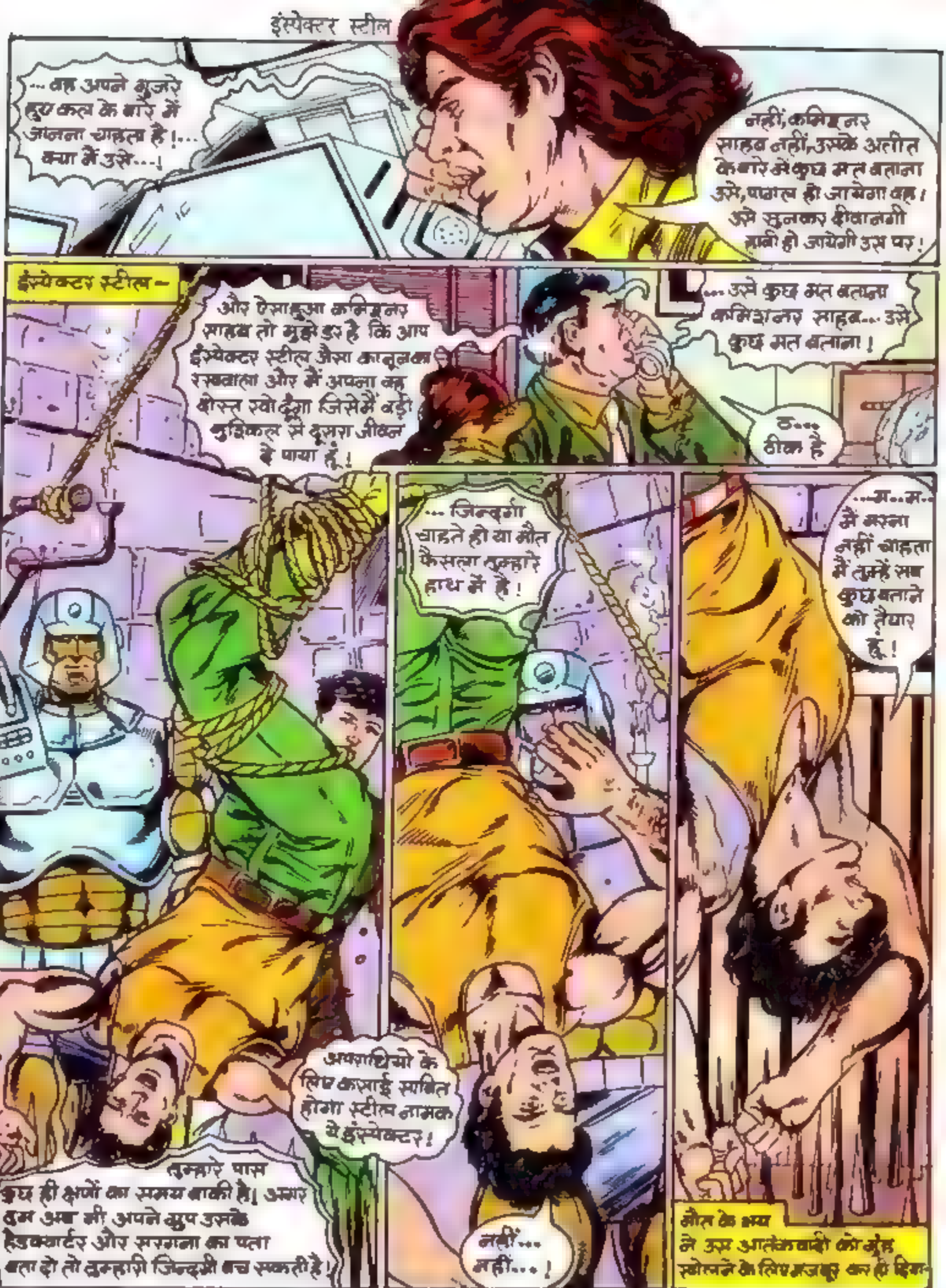
... वह अपने गुजरे हुए कल के बारे में जानना चाहता है!... क्या मैं उसे...!
नहीं, कमिश्नर साहब नहीं, उसके अतीत के बारे में कुछ मत बताना उसे, पगला ही जायेगा वह। उसे सुनकर दीवानगी सवार हो जायेगी उस पर!
इंस्पेक्टर स्टील –
और ऐसा हुआ कमिश्नर साहब तो मुझे डर है कि आप इंस्पेक्टर स्टील जैसा कातूलक रखवाला और मैं अपना वह दोस्त खो दूंगा जिसमें बड़ी मुश्किल से दूसरा जीवन दे पाया हूं!
... उसे कुछ मत बताना कमिश्नर साहब... उसे कुछ मत बताना!
ठ... ठीक है
... जिन्दगी चाहते हो या मौत फैसला तुम्हारे हाथ में है!
...म...म... मैं मरना नहीं चाहता मैं तुम्हें सब कुछ बताने को तैयार हूं!
अपराधियों के लिए कसाई साबित होगा स्टील नामक ये इंस्पेक्टर!
तुम्हारे पास कुछ ही क्षणों का समय बाकी है। अगर तुम अब भी अपने ग्रुप उसके हेडक्वार्टर और ठिकाना का पता बता दो तो तुम्हारी जिन्दगी बच सकती है!
नहीं... नहीं...!
मौत के भय ने उस आतंकवादी को मुंह खोलने के लिए मजबूर कर दिया।

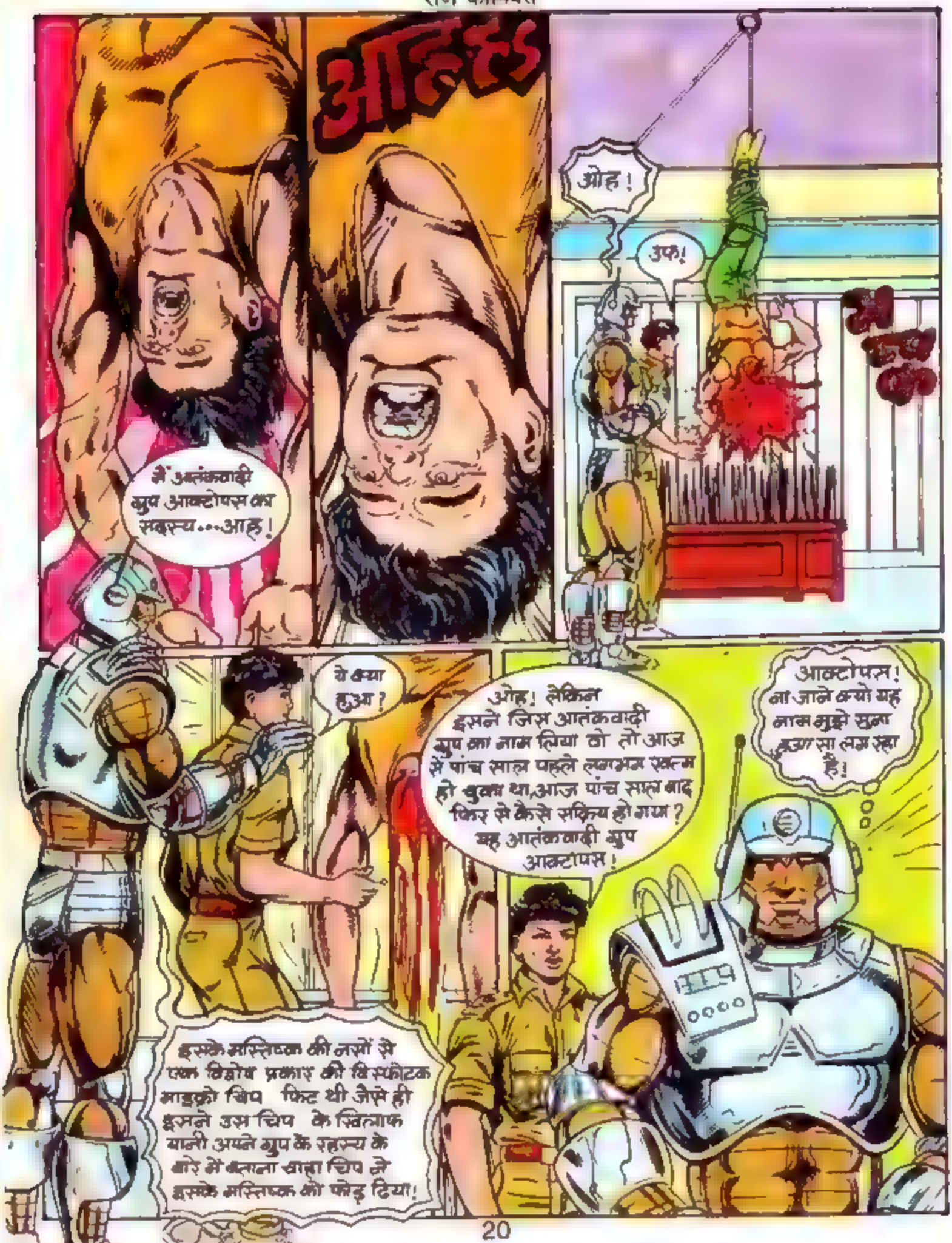
आहत
मैं आतंकवादी ग्रुप आक्टोपस का सदस्य...आह!
ओह!
उफ!
ये क्या हुआ?
ओह! लेकिन इसने जिस आतंकवादी ग्रुप का नाम लिया तो तो आज से पांच साल पहले लगभग खत्म हो चुका था,आज पांच साल बाद फिर से कैसे सक्रिय हो गया? यह आतंकवादी ग्रुप आक्टोपस!
आक्टोपस! ना जाने क्यों यह नाम मुझे सुना हुआ सा लग रहा है!
इसके मस्तिष्क की नसों से एक विद्रोध प्रकार की विस्फोटक माइक्रो चिप फिट थी जैसे ही इसने उस चिप के खिलाफ यानी अपने ग्रुप के रहस्य के बारे में बताना चाहा चिप ने इसके मस्तिष्क को फोड़ दिया!

इंस्पेक्टर स्टील के मस्तिष्क में हथौड़े की भांति बज रहा था वह एक ही नाम –

आक्टोपस

आक्टोपस

आक्टोपस

गैंग –

इंस्पेक्टर स्टील ! इंस्पेक्टर स्टील नाम है उसका जिसने ना केवल हमारे सफल हो चुके अभियान को असफल किया बल्कि हमारे एक साथी को भी गिरफ्तार कर लिया !

हां मकान आक्टोपस। हमारे गैंग के पहले ही 'काम' का एक इंस्पेक्टर द्वारा विफल होना अच्छा लक्षण नहीं है !

आपको याद होगा पांच साल पहले भी हमारी गैंग की तबाही का मुख्य कारण एक इंस्पेक्टर ही था!

आक्टोपस की सनिंद फुफकार 'आक्टोपस' –

याद है! सब याद है हमें लेकिन इस बार ऐसा नहीं होगा इंस्पेक्टर स्टील को इस बार हम अपनी तबाही का कारण नहीं बनने देंगे !

...बल्कि हम खुद ही उसे तबाह कर डालेंगे !

फिर क्रोध से फुंफकारता आक्टोपस अपने साथियों को ना जाने क्या-क्या समझाता चला गया।

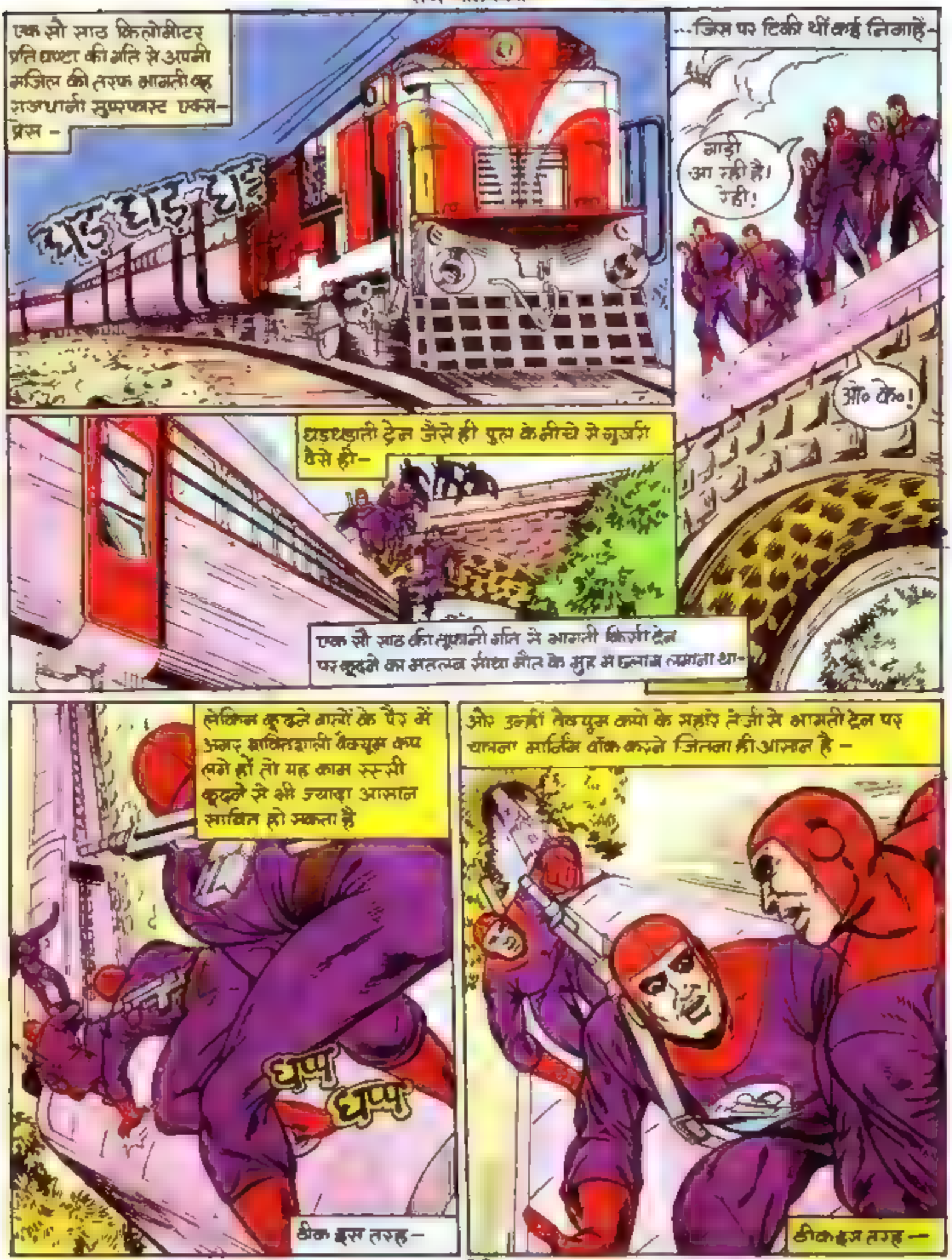
एक सौ साठ किलोमीटर प्रति घण्टा की गति से अपनी मंजिल की तरफ भागती वह राजधानी सुपरफास्ट एक्सप्रेस –
धड़ धड़ धड़
...जिस पर टिकी थीं कई निगाहें –
गाड़ी आ रही है! वहीं!
ओ० वॉ०!
धड़धड़ाती ट्रेन जैसे ही पुल के नीचे से गुजरी वैसे ही –
एक सौ साठ की तूफानी गति से भागती किसी ट्रेन पर कूदने का अतलन्त ऊंचा मौत के मुंह में छलांग लगाना था –
लेकिन कूदने वालों के पैर में ऊंचाई छलांग वैक्युम कप लगे हों तो यह काम रस्सी कूदने से भी ज्यादा आसान साबित हो सकता है
धप्प धप्प
ठीक इस तरह –
और उन्हीं वैक्युम कपों के सहारे तेजी से भागती ट्रेन पर चलना साबित वॉक करने जितना ही आसान है –
ठीक इस तरह –

कुछ ही देर बाद जंगल में खड़ी राजधानी एक्सप्रेस आतंक मचाने वाले गैंग ऑफ टोपस के सदस्यों के कब्जे में थी --
आऽऽऽऽऽऽ
आईऽऽऽ
बचाओ
!!
?!
फिर --
इंस्पेक्टर स्टील...
इंस्पेक्टर स्टील चाहिए हमें अब से ठीक आठ घण्टे बाद अगर वह मधुबनी के जंगलों में खड़ी ट्रेन तक अकेला नहीं पहुंचा...
...तो हम राजधानी एक्सप्रेस को मुर्दा एक्सप्रेस बना देंगे!
ओह अजीब मुसीबत में फंस गया हूं मैं! इंस्पेक्टर स्टील को भेजूं तो मुश्किल और न भेजूं तो मुश्किल! अरे! ये इंस्पेक्टर स्टील एकाएक कहां चला गया?
...अभी तो यहीं था हमारी नजर चूकते ही निकल गया!
...लेकिन गया कहां वह?
वहीं! वहीं गया होगा वह! अब इंस्पेक्टर स्टील्मा उसकी कार्रवाई का इंतजाम करो! क्विक!

मधुबनी के जंगलों में खड़ी राजधानी एक्सप्रेस के अन्दर-
एक घण्टा गुजर गया लेकिन हमारी "मांग" का कोई जवाब नहीं मिला है! लगता है पुलिस और इंस्पेक्टर स्टीव तक हमारी आवाज सही ढंग से नहीं पहुंच पाई!
...लेकिन इन बच्चों की अन्तिम चीखें उन तक जरूर पहुंचेंगी
हा हा
आई
ठीक कहा तुमने आवाज सचमुच उसके कानों तक नहीं पहुंची है। लेकिन...
मम्मी! हमें बचाओ!
हा...हा...हा! प्यारे बच्चो जिसे आक्टोपस गैंग खत्म करने की सोच ले उसे कोई नहीं बचा...
...सकता!!
आह!
आओ देखें!
अरे!... किसके हाथ थे वे जिन्होंने कम्पार्टमेंट के फर्श को तोड़कर हमारे साथी को नीचे खींच लिया!

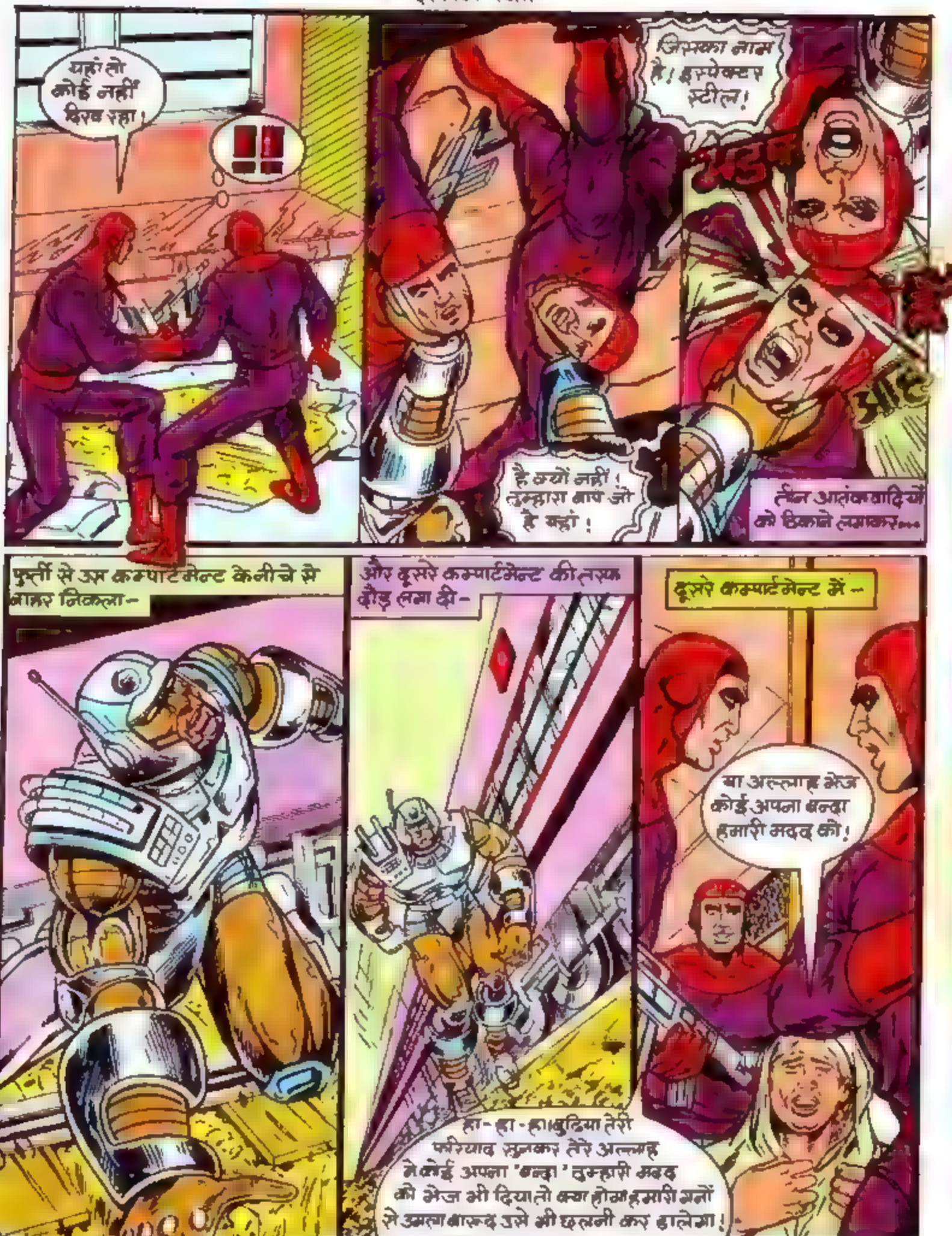
यहां तो कोई नहीं दिख रहा !
जिसका नाम है ! इंस्पेक्टर स्टील !
धड़ाम
आह
है क्यों नहीं ! तुम्हारा बाप जो है यहां !
तीन आतंकवादियों को ठिकाने लगाकर...
फुर्ती से उस कम्पार्टमेन्ट के नीचे से बाहर निकला –
और दूसरे कम्पार्टमेन्ट की तरफ दौड़ लगा दी –
दूसरे कम्पार्टमेन्ट में –
या अल्लाह मेरे कोई अपना बन्दा हमारी मदद को !
हा - हा - हा बुढिया तेरी फरियाद सुनकर तेरे अल्लाह ने कोई अपना 'बन्दा' तुम्हारी मदद को भेज भी दिया तो क्या होगा हमारी गनों से उसका बारूद उसे भी छलनी कर डालेगा !

तभी -
कड़ाक
आऽ
ये तुम्हारा वहम है पागल कुत्ते, क्योंकि अभी दुनिया की किसी फैक्ट्री में ऐसा वास्तु नहीं बना...
आह
...जो खुदा के बंदे के सीने को चाक कर सके!
...इंस्पेक्टर स्टील! खत्म कर डालो इसे!
बेहद फुर्ती से उन दोनों आतंक वादियों ने सम्भाले थे अपने हथियार
लेकिन उससे पहले ही मानो जादू के जोर पर इंस्पेक्टर स्टील के हाथ में प्रकट हुआ रिवॉल्वर गरजा -
धड़म
धड़म
धड़म
धड़म
जबकि इंस्पेक्टर स्टील अपनी गन का चेम्बर खोलकर उसमें एक विशिष्ट अंदाज में फूंक मार रहा था -
फूऽऽ
अब हथियारों की जगह दोनों अपने-अपने घायल हाथ सम्भाल रहे थे -

गोलियों की आवाजें सुनकर अपने साथियों की मदद के उद्देश्य से पहुंचे बाकी बचे आतंकवादियों को भी इंस्पेक्टर स्टील के कोप का शिकार होना पड़ा –

इसी के साथ राजधानी एक्सप्रेस पर छाया आक्टोपस ग्रुप के आतंक – वाहिनी का आतंक समाप्त हो चुका था –

बड़म

बड़म

बड़म

काश मैं कानून का रखवाला ना होता तो मेरी गोलियां तुम्हारे हाथों को नहीं तुम्हारे शरीरों को फोड़कर निकलती !

अब तुम सब पुलिस टॉर्चर रूम में चीख-चीखकर अपने ग्रुप और उसके हेडक्वार्टर के बारे में बताओगे !

लेकिन-

तभी –

फच्चापा

...यानी आक्टोपस ग्रुप तक पहुंचने के रास्ते एक बार फिर बन्द हो गये !

नहीं इंस्पेक्टर स्टील, सभी रास्ते बंद नहीं हुए...

धच्चाक

ओह, ये तो मैं भूल ही गया था कि मैं इनसे कुछ भी जानने में सफल नहीं हो सकता ! क्योंकि इनके मस्तिष्क में लगी चिप ने इन्हें कुछ बोलने का मौका ही नहीं दिया !

धच्चाक

...अभी मेरे सामने अष्टांगो के रूप में एक 'रास्ता' खुला हुआ है! लेकिन मुझे अफसोस है कि...

...इस रास्ते से होकर तू सीधा मौत के मुंह में पहुंचेगा!
ओह,एस्ट्रिड! तो पूरी तैयारी से आया है!

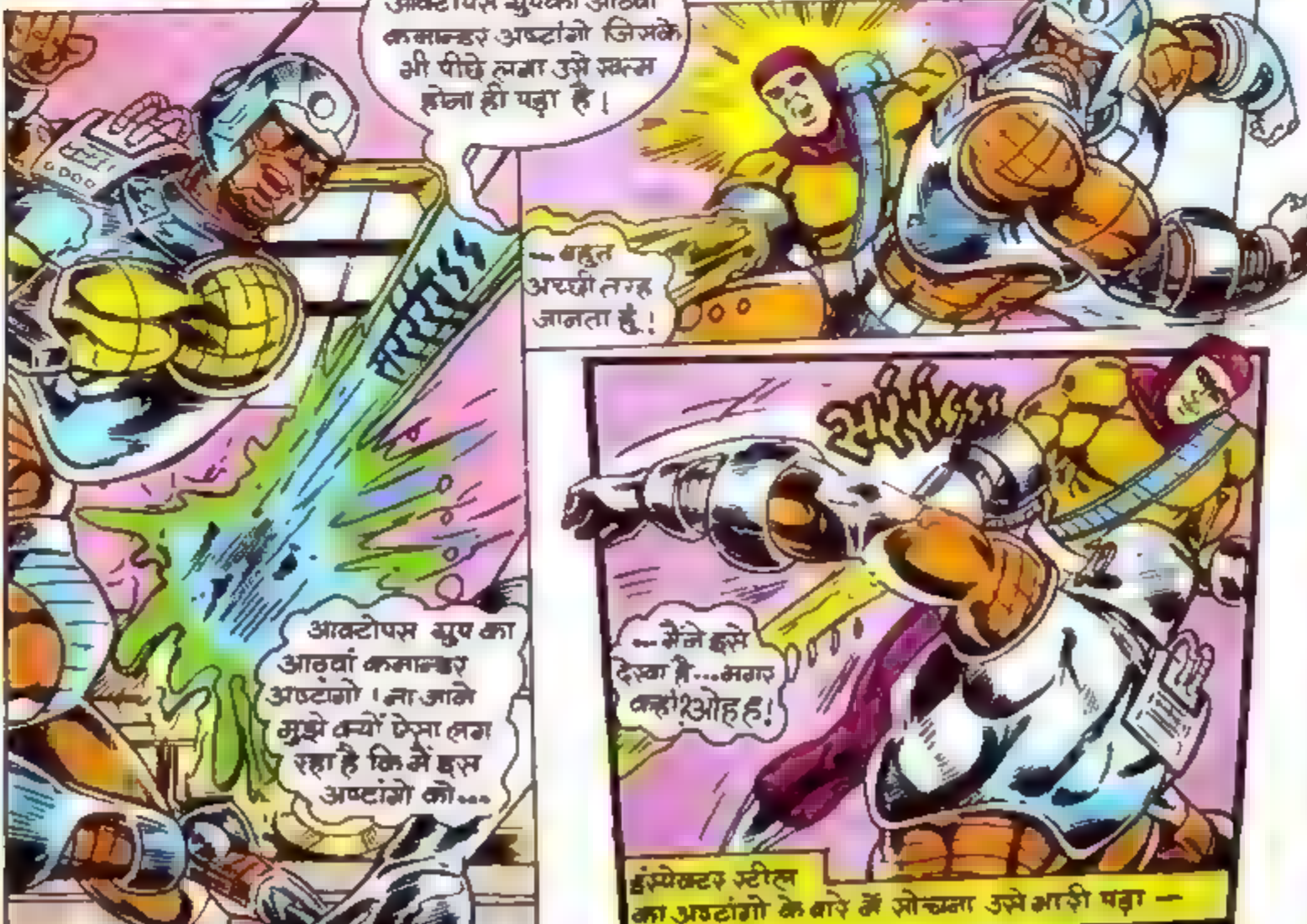
बचेगा नहीं तू इंस्पेक्टर! आक्टोपस ग्रुप का आठवां कमान्डर अष्टांगो जिसके भी पीछे लगा उसे खत्म होना ही पड़ा है!
— बहुत अच्छी तरह जानता हूं!
आक्टोपस ग्रुप का आठवां कमान्डर अष्टांगो! ना जाने मुझे क्यों ऐसा लग रहा है कि मैं इस अष्टांगो को...
— मैंने इसे देखा है...मगर कहां? ओह ह!
इंस्पेक्टर स्टील का अष्टांगो के बारे में सोचना उसे भारी पड़ा —

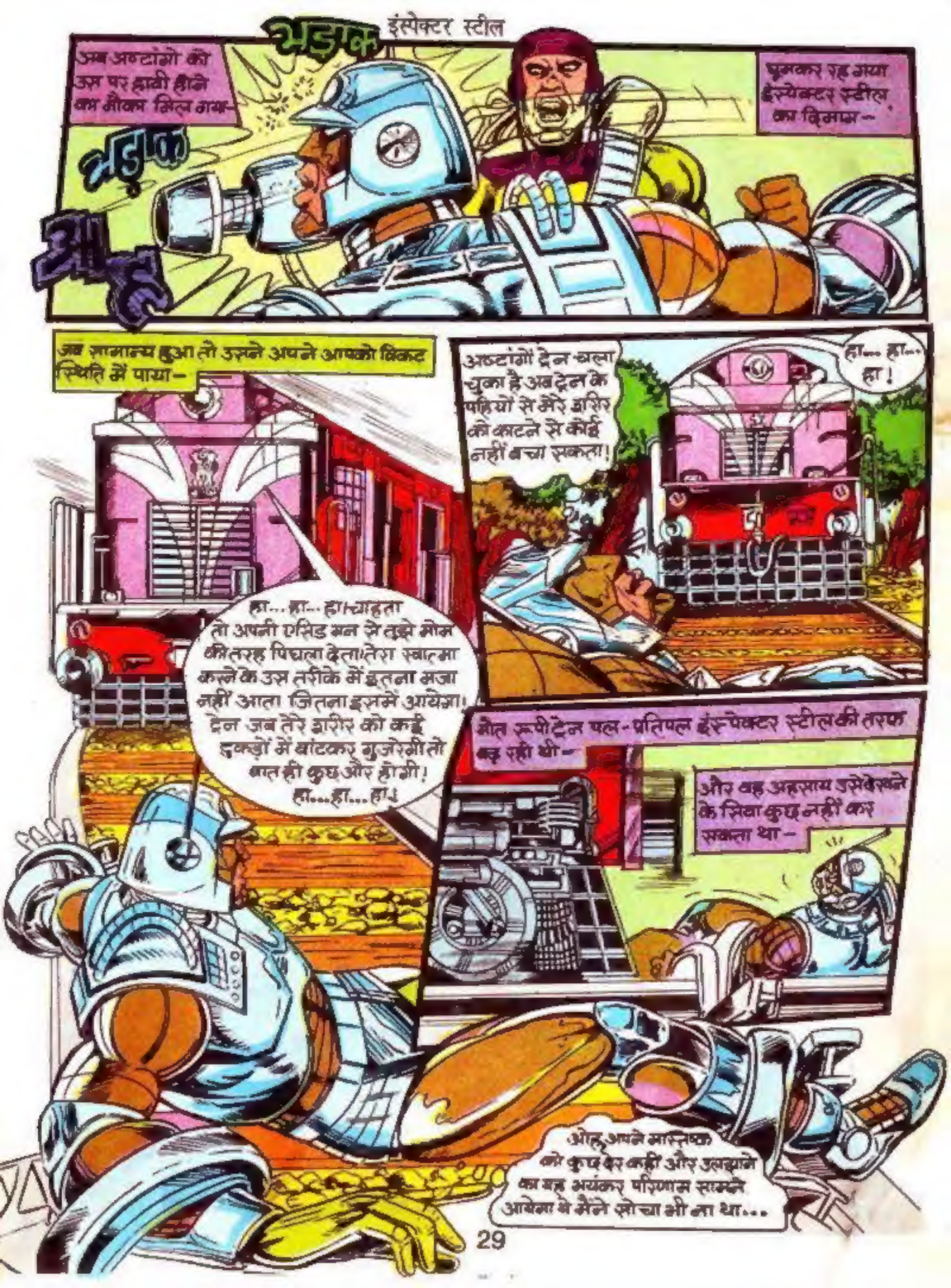
भड़ाक
उस अण्टोगो को उस पर हावी होने का मौका मिल गया-
भड़ाक
आह
घूमकर रह गया इंस्पेक्टर स्टील का दिमाग-
जब सामान्य हुआ तो उसने अपने आपको विकट स्थिति में पाया-
अण्टोगो ट्रेन चला चुका है अब ट्रेन के पहियों से मेरे शरीर को काटने से कोई नहीं बचा सकता!
हा... हा... हा!
हा... हा... हा! चाहता तो अपनी एसिड भरी जीभ से तुझे मोम की तरह पिघला देता! तेरा स्वात्मा करने के उस तरीके में इतना मजा नहीं आता जितना इसमें आयेगा। ट्रेन जब तेरे शरीर को कई टुकड़ों में बांटकर गुजरेगी तो बात ही कुछ और होगी! हा... हा... हा...!
मौत रूपी ट्रेन पल-प्रतिपल इंस्पेक्टर स्टील की तरफ बढ़ रही थी-
और वह असहाय उसे देखने के सिवा कुछ नहीं कर सकता था-
ओह, अपने मस्तिष्क को कुछ देर कहीं और उलझाने का यह भयंकर परिणाम सामने आयेगा ये मैंने सोचा भी ना था...

और उस समय तो ट्रेन उससे कुछ फुटों की दूरी पर ही थी जब –
!!
गोलियां चलाने वाली थी ऊपर उड़ते हेलीकॉप्टर में सवार स्वयं इंस्पेक्टर सलमा खान –
शुक्र है मैं अपने निशाने से इंस्पेक्टर स्टील के बंधनों को तो तोड़ पाई मुझे नहीं लगता इससे उसे कुछ फायदा होगा।
ऊपर से बरसी उन गोलियों ने उसके बंधनों के परखच्चे उड़ा दिये-
स्वयं इंस्पेक्टर सलमा खान का सोचना सही था-
इंस्पेक्टर स्टील को उस आजादी से कोई फायदा नहीं हुआ –
क्योंकि वह बचने के लिए उछलने की जगह पटरी पर बैठ गया था और –
ट्रेन के पास आते ही उसने इंजन पर छलांग लगा दी ... शायद मरने के लिए
इसी के साथ ट्रेन के इंजन में मौजूद अफसरों ने देखा उसी एक खतरनाक ठाकर-
!!
हा...हा...हा! खत्म हुआ... खत्म हुआ इंस्पेक्टर स्टील हा...हा...हा!

तभी –
अष्टांगो के सामने आ खड़ा हुआ –
इंस्पेक्टर स्टील!
हां! अष्टांगो मैं!
इंजन पर छलांग लगाकर तेरी शामत बनकर तेरे सामने पहुंचने में मुझे कितनी देर लगती थी!
भड़
आ
इंस्पेक्टर स्टील के एक ही भरपूर वार ने अष्टांगो को इंजन से बाहर उछाल दिया
तुम देन सम्भालो मैं उसे सम्भालता हूं!
!!
अब नीचे गिरा अष्टांगो अपनी गलत सम्भालता उसके पहले ही –
बड़म
बड़म
आंऽ
अष्टांगो को अपाहिज बनाने के बाद –

अपनी शान में विशिष्ट अंदाज से फूंक मारना नहीं भूला इंस्पेक्टर स्टील –

और इंस्पेक्टर स्टील के इसी विशिष्ट अंदाज ने सब इंस्पेक्टर सलमा खान को बुरी तरह चौंका दिया –

ये...ये एकशान इस एकशान को तो मैं अच्छी तरह पहचानती हूं!

...लेकिन नहीं!... ये कैसे हो सकता है? यह वह नहीं हो सकता। वह तो मर चुका है! पांच साल पहले मैंने उसकी 'लाश' अपनी आंखों से देखी थी!

लेकिन यह एकशान तो उसी का...!

ओ० के० सर!

क्या सोचने लगी सब इंस्पेक्टर सलमा? अन्य पुलिस कर्मियों के साथ आतंकवादियों की लाशें उठवाने का प्रबंध करो!

कमिश्नर गुप्ता की आवाज ने भंग की सलमा खान की तन्द्रा–

वह तुरन्त ही अन्य पुलिस-कर्मियों के साथ अक्टोपस ग्रुप के आतंकवादियों को उठाने में जुट गई –

इधर अष्टोमो को गिरफ्तार किया खुद इंस्पेक्टर स्टील ने –

तुम जैसे एक-एक कानून के दुश्मनों को जेल की अंधेरी कोठरियों की सलाखों के पीछे पहुंचाकर ही चैन से बैठेगा इंस्पेक्टर स्टील!

(समाप्त)